कक्षा 11 · संस्कृतम् केन्द्रिकम् (322) · भास्वती प्रथमो भागः

चतुर्थः पाठः
वीरः सर्वदमनः

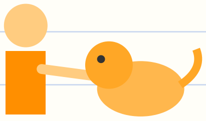

महाकविः कालिदासः · 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्', सप्तमः अङ्कः · नाट्यांशः (3 श्लोकाः)

पाठ-परिचयः

अयं नाट्यांशः **कविकुलगुरोः कालिदासस्य 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'** इति नाटकस्य **सप्तमात् अङ्कात्** गृहीतः। नाटकस्य मूलकथा महाभारतस्य शाकुन्तलोपाख्यानात्। दुर्वाससः शापात् राजा दुष्यन्तः शकुन्तलां विस्मृतवान्। परित्यक्ता शकुन्तला पुत्रेण **सर्वदमनेन** सह **मारीचस्य आश्रमे** वसति। देवासुरसङ्ग्रामात् प्रत्यागच्छन् दुष्यन्तः तत्र आगच्छति, **सिंहशिशुना क्रीडन्तं** वीरं बालं दृष्ट्वा तस्मिन् स्निह्यति। 'पुरुवंशः', 'शकुन्तला' इति श्रुत्वा तस्य मनसि सन्देहः जायते।

★ **परीक्षा-सुझाव: हिंदी में सार:** दुष्यन्त की भुजा फड़कती है (शुभ शकुन)। तभी आवाज़ आती है: 'चपलता मत करो।' दुष्यन्त देखता है कि दो तपस्विनियों द्वारा रोका जाता एक बालक, जिसका पराक्रम बालक जैसा नहीं, आधा दूध पिए सिंह-शावक को खेलने के लिए खींच रहा है: 'जम्हाई लो सिंह, तुम्हारे दाँत गिनूँगा।' तपस्विनी: 'ठीक ही ऋषियों ने तुम्हारा नाम सर्वदमन रखा है।' दुष्यन्त का मन अपने पुत्र की तरह उस पर स्नेह करता है। खिलौने (मिट्टी का मोर) का लालच देकर भी बालक नहीं मानता; तपस्विनी दुष्यन्त से सिंह-शावक छुड़वाने को कहती है। बालक के स्पर्श से दुष्यन्त को अद्भुत सुख मिलता है। 'इसका वंश?' 'पुरुवंश!' 'शकुन्त-लावण्य देखो' सुनकर बालक पूछता है 'कहाँ है मेरी माँ?': दुष्यन्त सोचता है, क्या इसकी माता का नाम शकुन्तला है?

परीक्षा-दृष्टि से महत्त्वपूर्ण ★★★

- ➤ श्लोक 1 (मनोरथाय नाशंसे...), 2 (अर्धपीतस्तनं...), 3 (अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण...): व्याख्या/अन्वय
- ➤ कः कं प्रति कथयति (बालः, प्रथमा/द्वितीया तापसी, दुष्यन्तः)
- ➤ शब्द: अबालसत्त्वः = बड़ों-सा पराक्रमी; जृम्भस्व = जम्हाई लो; अपत्यनिर्विशेषाणि = सन्तान-तुल्य; सत्त्वानि = प्राणी; संरम्भः = हठ; औरसः = अपना (सगा); अनपत्यता = निःसन्तानता; क्रीडनकम् = खिलौना; उटजे = कुटिया में; व्यपदेशः = वंश; एकान्वयः = एक ही वंश का
- ➤ प्रत्यय: सूचयित्वा (क्त्वा), प्रक्रीडितुम् (तुमुन्), अवलोक्य, उपलभ्य (ल्यप्), अनुबध्यमानः (शानच्), उपलालयन् (शतृ), निष्क्रान्ता (क्त + टाप्)

पात्राणि

दुष्यन्तः (पुरुवंशी राजा) · **बालः सर्वदमनः** (दुष्यन्त-शकुन्तला का पुत्र; आगे 'भरत', जिसके नाम पर 'भारत') · **प्रथमा, द्वितीया तापसी** (आश्रम की तपस्विनियाँ)। स्थान: हेमकूट पर्वत पर मारीच (कश्यप) ऋषि का आश्रम।

नाट्य-शब्दः निमित्तं सूचयित्वा (शकुन का अभिनय), नेपथ्ये, कर्णं दत्त्वा, सविस्मयम्, सस्मितम्, आत्मगतम् (मन में), प्रकाशम् (सबके सुनने योग्य), प्रविश्य।

SAMPLE notesbazar.in

4.1 मूलपाठः, अनुवादः ★★★

दुष्यन्तः – (निमित्तं सूचयित्वा)
श्लोक 1 मनोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा।
पूर्वावधीरितं श्रेयो दुःखाय परिवर्तते॥

> **अन्वयः:** (हे) बाहो! मनोरथाय न आशंसे, (त्वं) वृथा किं स्पन्दसे? पूर्वावधीरितं श्रेयः दुःखाय परिवर्तते।
> **अनुवादः** (शकुन का अभिनय करके) हे भुजा! मैं अपने मनोरथ (शकुन्तला-मिलन) की आशा नहीं करता, फिर तुम व्यर्थ क्यों फड़कती हो? पहले ठुकराया गया कल्याण (सौभाग्य) दुःख में बदल जाता है।

(नेपथ्ये) मा खलु चापलं कुरु। कथं गत एवात्मनः प्रकृतिम्?
दुष्यन्तः – (कर्णं दत्त्वा) अभूमिरियमविनयस्य। को नु खल्वेष निषिध्यते? (शब्दानुसारेणावलोक्य सविस्मयम्) अये, को नु खल्वयम् अनुबध्यमानस्तपस्विनीभ्याम् अबालसत्त्वो बालः।

> **अनुवादः** (पर्दे के पीछे से) चपलता मत करो। क्या फिर अपने स्वभाव पर आ गए? दुष्यन्त: (कान लगाकर) यह (आश्रम) अविनय का स्थान नहीं है। यह कौन रोका जा रहा है? (शब्द की दिशा में देखकर, आश्चर्य से) अरे, दो तपस्विनियों द्वारा रोका जाता हुआ, बालक से बढ़कर पराक्रम वाला यह बालक कौन है?

श्लोक 2 ★★★ अर्धपीतस्तनं मातुरामर्दक्लिष्टकेसरम्।
प्रक्रीडितुं सिंहशिशुं बलात्कारेण कर्षति॥

> **अन्वयः:** (अयं बालः) मातुः अर्धपीतस्तनम् आमर्दक्लिष्टकेसरं सिंहशिशुं प्रक्रीडितुं बलात्कारेण कर्षति।
> **अनुवादः** (यह बालक) माँ (सिंहनी) का आधा दूध पिए हुए, (खींचतान से) मसले जाने के कारण बिखरे अयाल वाले सिंह के बच्चे को खेलने के लिए ज़बरदस्ती खींच रहा है।

बालः – जृम्भस्व सिंह! दन्तांस्ते गणयिष्ये।
प्रथमा – अविनीत! किं नोऽपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि? हन्त! वर्धते ते संरम्भः। स्थाने खलु ऋषिजनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि।

> **अनुवादः** बालक: मुँह खोलो (जम्हाई लो) सिंह! तुम्हारे दाँत गिनूँगा। पहली तपस्विनी: अरे उद्दण्ड! हमारी सन्तान के समान प्राणियों को क्यों सताते हो? हाय! तुम्हारा हठ बढ़ता जा रहा है। ऋषियों ने ठीक ही तुम्हारा नाम 'सर्वदमन' (सबका दमन करने वाला) रखा है।

दुष्यन्तः – किं नु खलु बालेऽस्मिन् औरस इव पुत्रे स्निह्यति मे मनः? नूनमनपत्यता मां वत्सलयति।

> **अनुवादः** दुष्यन्त: क्या कारण है कि इस बालक पर मेरा मन अपने सगे पुत्र की तरह स्नेह कर रहा है? निश्चय ही (मेरी) निःसन्तानता मुझे स्नेहयुक्त बना रही है।

द्वितीया – एषा खलु केसरिणी त्वां लङ्घयिष्यति यद्यस्याः पुत्रकं न मुञ्चसि।
बालः – (सस्मितम्) अहो बलीयः खलु भीतोऽस्मि। (इत्यधरं दर्शयति)

> **अनुवादः** दूसरी तपस्विनी: यदि इसके बच्चे को नहीं छोड़ोगे तो यह सिंहनी तुम पर झपट पड़ेगी। बालक: (मुस्कुराकर) अरे, मैं तो बहुत डर गया! (ऐसा कहकर होंठ बिचकाता है)

प्रथमा – वत्स! एनं बालमृगेन्द्रं मुञ्च, अपरं ते क्रीडनकं दास्यामि। **बालः** – कुत्र, देहि तत् (इति हस्तं प्रसारयति)।
द्वितीया – सुव्रते! न शक्य एष वाचामात्रेण विरमयितुम्। गच्छ त्वम्। मदीये उटजे मृत्तिकामयूरस्तिष्ठति। तमस्योपहर।

> **अनुवादः** पहली: बेटा! इस सिंह-शावक को छोड़ दो, तुम्हें दूसरा खिलौना दूँगी। बालक: कहाँ है, दो वह (हाथ फैलाता है)। दूसरी: हे सुव्रता! यह केवल कहने से नहीं रुकेगा। तुम जाओ। मेरी कुटिया में मिट्टी का मोर रखा है; उसे इसके लिए ले आओ।

बालः – अनेनैव तावत् क्रीडिष्यामि। (इति तापसीं विलोक्य हसति)
तापसी – भवतु। न मामयं गणयति। (राजानमवलोक्य) भद्रमुख! मोचयानेन बाध्यमानं बालमृगेन्द्रम्।
दुष्यन्तः – आकारसदृशं चेष्टितमेवास्य कथयति। (आत्मगतम्)

> **अनुवादः** बालक: तब तक इसी (सिंह-शावक) से खेलूँगा। (तपस्विनी को देखकर हँसता है) तपस्विनी: अच्छा, यह मेरी बात नहीं मानता। (राजा को देखकर) भद्रपुरुष! इसके द्वारा सताए जा रहे सिंह-शावक को छुड़वाइए। दुष्यन्त: इसकी चेष्टा ही इसके (राजसी) आकार के अनुरूप (कुल) को बता रही है। (मन में)

SAMPLE · notesbazar.in

श्लोक 3 ★★★ अनेन कस्यापि कुलाङ्कुरेण स्पृष्टस्य गात्रेषु सुखं ममैवम्।
कां निर्वृतिं चेतसि तस्य कुर्याद् यस्यायमङ्कात् कृतिनः प्ररूढः॥

> **अन्वयः:** अनेन कस्य अपि कुलाङ्कुरेण गात्रेषु स्पृष्टस्य मम एवं सुखम् (अस्ति)। (तर्हि) अयं यस्य कृतिनः अङ्कात् प्ररूढः, तस्य चेतसि कां निर्वृतिं कुर्यात्?
>
> **अनुवादः** किसी के कुल के इस अंकुर (बालक) के द्वारा अंगों में छुए जाने पर मुझे ऐसा सुख मिल रहा है; तो जिस पुण्यवान् की गोद से यह उत्पन्न हुआ है, उसके मन में यह कितना आनन्द उत्पन्न करता होगा!
>
> **छन्दः** उपजाति।

दुष्यन्तः – (बालमुपलालयन्, प्रकाशम्) अथ कोऽस्य व्यपदेशः? **तापसी** – पुरुवंशः। **दुष्यन्तः** – (आत्मगतम्) कथमेकान्वयो मम? **तापसी** – (प्रविश्य) वत्स सर्वदमन! शकुन्तलावण्यं प्रेक्षस्व। **बालः** – कुत्र वा ममाम्बा? **दुष्यन्तः** – (आत्मगतम्) किं वा शकुन्तलेत्यस्य मातुराख्या? **बालः** – रोचते मे एष मयूरः। (इति क्रीडनकमादत्ते)

> **अनुवादः** दुष्यन्त: (बालक को दुलारते हुए, प्रकट रूप से) इसका वंश क्या है? तपस्विनी: पुरुवंश। दुष्यन्त: (मन में) क्या मेरे ही वंश का है? तपस्विनी: (प्रवेश करके) बेटा सर्वदमन! शकुन्त (पक्षी) का लावण्य (सुन्दरता) देखो। बालक: कहाँ है मेरी माँ? दुष्यन्त: (मन में) क्या इसकी माँ का नाम शकुन्तला है? बालक: मुझे यह मोर अच्छा लगता है। (खिलौना ले लेता है)
>
> **श्लेषः** 'शकुन्तलावण्यम्' = शकुन्त + लावण्यम् (पक्षी की सुन्दरता); बालक ने 'शकुन्तला' (माँ) सुना।

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च ★★★

पदम्	अर्थः
नाशंसे (न + आशंसे)	आशा नहीं करता
स्पन्दसे	फड़कती हो
पूर्वावधीरितम्	पहले ठुकराया गया
प्रकृतिम् (प्र + कृ + क्तिन्)	स्वभाव को
निषिध्यते	रोका जाता है
अनुबध्यमानः	रोका जाता हुआ
अबालसत्त्वः	बड़ों-सा पराक्रमी
आमर्दक्लिष्टकेसरम्	मसलने से बिखरे अयाल वाला
जृम्भस्व	जम्हाई लो (मुँह खोलो)
अपत्यनिर्विशेषाणि	सन्तान के समान
सत्त्वानि	प्राणियों को
विप्रकरोषि	सताते हो
संरम्भः	हठ, उद्दण्डता
कृतनामधेयः	जिसका नाम रखा गया है
औरसः	सगा (अपना)
अनपत्यता	निःसन्तानता
वत्सलयति	स्नेहयुक्त बनाती है
केसरिणी	सिंहनी
क्रीडनकम्	खिलौना
वाचामात्रेण	कहने मात्र से
विरमयितुम्	रोकने के लिए
उटजे	कुटिया में

SAMPLE · notesbazar.in

उपहर	ले आओ
आकारसदृशम्	आकार के अनुरूप
आत्मगतम्	मन ही मन
कुलाङ्कुरेण	कुल के अंकुर (बालक) द्वारा
निर्वृतिम्	आनन्द
कृतिनः (कृत + इनि)	पुण्यवान् का
प्ररूढः (प्र + रुह् + क्त)	उत्पन्न हुआ
व्यपदेशः	वंश
एकान्वयः	एक ही वंश का

NCERT अभ्यासः, पूर्णतः हलः

1. संस्कृतभाषया उत्तरं देयम्।

उत्तर: (क) कस्य कवेः कस्मात् पुस्तकाद् गृहीतोऽयं पाठः? **अयं पाठः महाकवेः कालिदासस्य अभिज्ञानशाकुन्तलात् (सप्तमात् अङ्कात्) गृहीतः।**
(ख) बालः कीदृशं सिंहशिशुं कर्षति स्म? **बालः मातुः अर्धपीतस्तनम् आमर्दक्लिष्टकेसरं सिंहशिशुं कर्षति स्म।**
(ग) तापसी बालाय क्रीडार्थं किं दत्तवती? **तापसी बालाय क्रीडार्थं मृत्तिकामयूरं दत्तवती।**
(घ) क्रीडापरस्य बालस्य मातुः किं नामधेयम्? **क्रीडापरस्य बालस्य मातुः नामधेयं शकुन्तला।**
(ङ) बालाय किं रोचते? **बालाय (मृत्तिका)मयूरः रोचते।**

2. रिक्तस्थानपूर्तिः

उत्तर: (क) अपत्यनिर्विशेषाणि **सत्त्वानि** विप्रकरोषि। (ख) पुत्रे स्निह्यति मे **मनः**। (ग) यद्यस्याः **पुत्रकम्** न मुञ्चसि। (घ) अपरं क्रीडनकं ते **दास्यामि**। (ङ) **आकारसदृशम्** चेष्टितमेवास्य कथयति।

3. सन्धिच्छेदः

उत्तर: गत एवात्मनः = **गतः + एव + आत्मनः** · औरस इव = **औरसः + इव** · दन्तांस्ते = **दन्तान् + ते** · यद्यस्याः = **यदि + अस्याः** · शकुन्तलेत्यस्य = **शकुन्तला + इति + अस्य** · खल्वयम् = **खलु + अयम्** · बालेऽस्मिन् = **बाले + अस्मिन्** · भीतोऽस्मि = **भीतः + अस्मि** · कस्यापि = **कस्य + अपि** · एकान्वयः = **एक + अन्वयः** · एवास्य = **एव + अस्य** · तमस्योपहर = **तम् + अस्य + उपहर** · ममैवम् = **मम + एवम्** · इत्यधरम् = **इति + अधरम्** · ममाम्बा = **मम + अम्बा** · अनेनैव = **अनेन + एव**

6. प्रकृति-प्रत्यय-परिचयः

उत्तर: सूचयित्वा = **सूच् + णिच् + क्त्वा** · प्रक्रीडितुम् = **प्र + क्रीड् + तुमुन्** · अवलोक्य = **अव + लोक् + ल्यप्** · अनुबध्यमानः = **अनु + बन्ध् + (कर्मणि) शानच्** · निष्क्रान्ता = **निस् + क्रम् + क्त + टाप्** · उपलभ्य = **उप + लभ् + ल्यप्** · उपलालयन् = **उप + लल् + णिच् + शतृ**

4. विग्रहः, समासनाम च

पदम्	विग्रहः	समासः
पूर्वावधीरितम्	पूर्वम् अवधीरितम्	कर्मधारयः
अभूमिः	न भूमिः	नञ् तत्पु.
अविनयस्य	न विनयः, तस्य	नञ् तत्पु.
शब्दानुसारेण	शब्दस्य अनुसारेण	षष्ठी तत्पु.
सविस्मयम्	विस्मयेन सहितम्	अव्ययीभावः
अबालसत्त्वः	न बालस्य सत्त्वम् इव सत्त्वं यस्य सः	बहुव्रीहिः
सिंहशिशुम्	सिंहस्य शिशुम्	षष्ठी तत्पु.

अनपत्यता	न विद्यते अपत्यं यस्य सः अनपत्यः, तस्य भावः	बहुव्रीहिः (+ तल्)
सस्मितम्	स्मितेन सहितम्	अव्ययीभावः
मृत्तिकामयूरः	मृत्तिकया निर्मितः मयूरः	मध्यमपदलोपी कर्मधारयः
बालमृगेन्द्रम्	बालः च असौ मृगेन्द्रः, तम्	कर्मधारयः
एकान्वयः	एकः एव अन्वयः यस्य सः	बहुव्रीहिः
आकारसदृशम्	आकारेण सदृशम्	तृतीया तत्पु.
बालस्पर्शम्	बालस्य स्पर्शम्	षष्ठी तत्पु.

5. वाक्येषु प्रयोगः

उत्तर: सविस्मयम् – **बालः सविस्मयं गगनं पश्यति।** · कर्षति – **कृषकः हलं कर्षति।** · स्निह्यति – **माता पुत्रे स्निह्यति।** · केसरिणी – **वने केसरिणी गर्जति।** · उटजे – **मुनिः उटजे वसति।** · व्यपदेशः – **अस्य बालस्य व्यपदेशः पुरुवंशः।** · प्रेक्षस्व – **वत्स! गगने चन्द्रं प्रेक्षस्व।** · ममाम्बा – **ममाम्बा मह्यं कथां श्रावयति।**

7. सप्रसङ्ग व्याख्या (मातृभाषा)

उत्तर: प्रसङ्ग (तीनों के लिए): ये पंक्तियाँ महाकवि कालिदास-रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के सप्तम अङ्क से संकलित 'वीरः सर्वदमनः' पाठ से हैं। देवासुर-संग्राम से लौटता हुआ राजा दुष्यन्त मारीच ऋषि के आश्रम में आता है।

(क) **मनोरथाय नाशंसे... दुःखाय परिवर्तते।** दुष्यन्त की दाहिनी भुजा फड़कती है, जो पत्नी-मिलन का शुभ शकुन है। वह भुजा से कहता है: मैं अब मनोरथ-पूर्ति की आशा नहीं करता, तुम व्यर्थ क्यों फड़क रही हो? पहले जिस सौभाग्य (शकुन्तला) को मैंने ठुकरा दिया, वह अब दुःख में बदल गया है। यहाँ दुष्यन्त का पश्चात्ताप प्रकट है।

(ख) **अर्धपीतस्तनं... बलात्कारेण कर्षति।** दुष्यन्त आश्चर्य से देखता है कि एक बालक माँ का आधा ही दूध पिए हुए सिंह-शावक को, जिसके अयाल खींचतान से बिखर गए हैं, खेलने के लिए ज़बरदस्ती खींच रहा है। यह बालक की असाधारण वीरता (अबालसत्त्व) दर्शाता है।

(ग) **किं न खलु बालेऽस्मिन्... मां वत्सलयति।** दुष्यन्त सोचता है कि इस बालक पर मेरा मन अपने सगे पुत्र-सा स्नेह क्यों कर रहा है? शायद मेरी निःसन्तानता ही मुझे वात्सल्य से भर रही है। (वास्तव में यह रक्त का सम्बन्ध है।)

8. आशय (श्लोक 3)

उत्तर: बालक के स्पर्श मात्र से दुष्यन्त को अपार सुख मिलता है। वह सोचता है: जब मुझ अपरिचित को इतना सुख मिल रहा है, तो जिस भाग्यशाली की गोद से यह उत्पन्न हुआ है, उसके हृदय में यह कितना आनन्द भरता होगा! (वह भाग्यशाली स्वयं दुष्यन्त है; नाटकीय व्यंग्य।)

परीक्षा-शैली प्रश्नाः ★★★

नाट्यांशः: बालः – जृम्भस्व सिंह! दन्तांस्ते गणयिष्ये। प्रथमा – अविनीत! किं नोऽपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि? हन्त! वर्धते ते संरम्भः। स्थाने खलु ऋषिजनेन सर्वदमन इति कृतनामधेयोऽसि।

(अ) एकपदेन: (i) बालः कस्य दन्तान् गणयिष्यति? (ii) ऋषिजनेन बालस्य किं नाम कृतम्?

(आ) पूर्णवाक्येन: (i) प्रथमा तापसी बालं किं कथयति? (ii) बालः सिंहं किं कथयति?

(इ) (i) 'विनीत!' इत्यस्य विलोमम्? (ii) 'वर्धते' क्रियायाः कर्ता? (iii) 'प्राणिनः' इत्यर्थे पदम्?

उत्तर: (अ) (i) **सिंहस्य** (ii) **सर्वदमनः** (आ) (i) **प्रथमा कथयति – अविनीत! किं नः अपत्यनिर्विशेषाणि सत्त्वानि विप्रकरोषि?** (ii) **बालः कथयति – जृम्भस्व सिंह! दन्तान् ते गणयिष्ये।** (इ) (i) **अविनीत** (ii) **संरम्भः** (iii) **सत्त्वानि**

कः कं प्रति कथयति?

वाक्यम्	कः	कं प्रति
जृम्भस्व सिंह!	बालः	सिंहशिशुम्
एषा खलु केसरिणी त्वां लङ्घयिष्यति	द्वितीया तापसी	बालम्
भद्रमुख! मोचयानेन...	तापसी	दुष्यन्तम्

अथ कोऽस्य व्यपदेशः?	दुष्यन्तः	तापसीम्
कुत्र वा ममाम्बा?	बालः	तापसीम्

अन्वय-पूर्तिः (मञ्जूषाः कर्षति, सिंहशिशुम्, प्रक्रीडितुम्): (अयं बालः) मातुः अर्धपीतस्तनम् आमर्दक्लिष्टकेसरं (i) ___ (ii) ___ बलात्कारेण (iii) ___।

उत्तरः (i) **सिंहशिशुम्** (ii) **प्रक्रीडितुम्** (iii) **कर्षति**

बहुविकल्पीयप्रश्नाः: 20 MCQs

1. पाठः कस्मात् नाटकात्?
   (A) स्वप्नवासवदत्तात् (B) प्रतिमानाटकात् (C) अभिज्ञानशाकुन्तलात् (D) उत्तररामचरितात्
2. पाठः कतमात् अङ्कात्?
   (A) सप्तमात् (B) प्रथमात् (C) चतुर्थात् (D) पञ्चमात्
3. नाटकस्य मूलकथा कुतः?
   (A) रामायणात् (B) पुराणात् (C) वेदात् (D) महाभारतात्
4. शकुन्तला कस्य आश्रमे वसति?
   (A) कण्वस्य (B) मारीचस्य (C) विश्वामित्रस्य (D) वसिष्ठस्य
5. बालः केन सह क्रीडति?
   (A) मृगेण (B) सिंहशिशुना (C) मयूरेण (D) गजेन
6. बालस्य नाम किम्?
   (A) भरतः (B) पुरुः (C) दुष्यन्तः (D) सर्वदमनः
7. 'जृम्भस्व सिंह!' – कः?
   (A) बालः (B) तापसी (C) दुष्यन्तः (D) शकुन्तला
8. बालाय क्रीडनकं किम्?
   (A) कन्दुकः (B) रथः (C) मृत्तिकामयूरः (D) धनुः
9. बालस्य व्यपदेशः कः?
   (A) कुरुवंशः (B) रघुवंशः (C) यदुवंशः (D) पुरुवंशः
10. 'अबालसत्त्वः' अर्थः:
   (A) दुर्बल बालक (B) बड़ों-सा पराक्रमी (C) बालक नहीं (D) सत्त्वहीन
11. 'औरसः' अर्थः:
   (A) पराया (B) गोद लिया (C) सगा (D) शत्रु
12. 'अनपत्यता' अर्थः:
   (A) निःसन्तानता (B) अपमान (C) अपत्य (D) सन्तान-सुख
13. 'उटजे' अर्थः:
   (A) उद्यान में (B) कुटिया में (C) वन में (D) नदी में
14. 'शकुन्तलावण्यम्' अत्र श्लेषः – शकुन्तः अर्थः:
   (A) शकुन्तला (B) मयूर (C) पक्षी (D) सिंह
15. दुष्यन्तस्य कः अङ्गः स्पन्दते?
   (A) नेत्रम् (B) ललाटम् (C) पादः (D) बाहुः
16. 'प्रक्रीडितुम्' प्रत्ययः:
   (A) तुमुन् (B) ल्यप् (C) क्त्वा (D) शतृ
17. 'अनुबध्यमानः' प्रत्ययः:
   (A) शानच् (B) शतृ (C) क्त (D) तव्यत्
18. 'सविस्मयम्' समासः:
   (A) बहुव्रीहिः (B) द्वन्द्वः (C) तत्पुरुषः (D) अव्ययीभावः
19. 'दन्तांस्ते' विच्छेदः:
   (A) दन्ता + स्ते (B) दन्तान् + ते (C) दन्तां + स्ते (D) दन्ताः + ते
20. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य रचयिता:
   (A) भासः (B) भवभूतिः (C) कालिदासः (D) शूद्रकः

1 (C) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (B) · 5 (B) · 6 (D) · 7 (A) · 8 (C) · 9 (D) · 10 (B) · 11 (C) · 12 (A) · 13 (B) · 14 (C) · 15 (D) · 16 (A) · 17 (A) · 18 (D) · 19 (B) · 20 (C)

कथन-कारण (6)

(A) दोनों सही, कारण सही व्याख्या। (B) दोनों सही, कारण सही व्याख्या नहीं। (C) कथन सही, कारण गलत। (D) कथन गलत, कारण सही।

1. कथन: ऋषियों ने बालक का नाम सर्वदमन रखा। कारण: वह सिंह-शावक जैसे बलवान् प्राणियों का भी दमन करता था।
2. कथन: दुष्यन्त बालक पर स्नेह करता है। कारण: वह बालक वास्तव में दुष्यन्त का ही पुत्र है (रक्त-सम्बन्ध)।
3. कथन: बालक तपस्विनी के कहने से तुरन्त मान गया। कारण: तपस्विनी कहती है 'न शक्य एष वाचामात्रेण विरमयितुम्'।

4. कथन: बालक रघुवंशी है। कारण: तपस्विनी उसका वंश 'पुरुवंश' बताती है।
5. कथन: दुष्यन्त की भुजा फड़कती है। कारण: यह (पत्नी-मिलन का) शुभ शकुन है।
6. कथन: यह पाठ सप्तम अङ्क से है। कारण: मिट्टी का मोर बालक को अच्छा लगा।

उत्तर: 1 (A) · 2 (A) · 3 (D) · 4 (D) · 5 (A) · 6 (B)

अंतिम-रात सारांश

- कालिदास → अभिज्ञानशाकुन्तलम् (7 अङ्क) → सप्तम अङ्क; मूल कथा महाभारत (शाकुन्तलोपाख्यान)।
- स्थान: मारीच-आश्रम; दुष्यन्त देवासुर-संग्राम से लौटते हुए।
- बालक सर्वदमन: अबालसत्त्व, सिंहशिशु को खींचता, 'जृम्भस्व सिंह!'; खिलौना: मृत्तिकामयूर।
- सुराग: पुरुवंश, 'शकुन्त-लावण्य' → 'ममाम्बा?' → माता शकुन्तला।
- श्लोक 1 (बाहु-स्पन्दन, पश्चात्ताप), 2 (सिंहशिशु), 3 (स्पर्श-सुख, कुलाङ्कुर)।

SAMPLE · notesbazar.in